RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2015-17

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

मूल्य : 2 रु.	
वर्ष: 72	अंक : 7
सृष्टि संवत् 1960853116	
17 मई 2015	
दयानन्दाब्द 189	
वार्षिक : 100 रू.	
आजीवन : 1000 रू.	
दूरभाष : 2292926, 5062726	

जालन्धर

वर्ष–72, अंक : 7, 14/17 मई 2015 तदनुसार 3 ज्येष्ठ सम्वत् 2072 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

इन्द्रियां एक-दूसरी की सहायता करती हैं

–ले० श्री स्वामी वेदानंद जी (दयानन्द) तीर्थ

अध्वर्युभिः पञ्चभिः सप्त विप्राः प्रियं रक्षन्ते निहितं पदं वेः।
प्राञ्चो मदन्त्युक्षणो अजुर्या देवा देवानामनु हि व्रता गुः।।

–ऋग्वेद ३।७।७

शब्दार्थ-सप्तविप्राः-सात विप्र-ज्ञानेन्द्रियां-पांच ज्ञानेन्द्रियां एक मन तथा सातवीं बुद्धि। **पञ्चभिः**-पांच। **अध्वर्युभिः**-अध्वर्युओं, कर्मेन्द्रियों के साथ मिलकर। **वेः**-परमात्मा के। **निहितम्**-गुप्त। **प्रियम्**-प्रिय। **पदम्**-पद की, प्राप्तव्य की, अधिष्ठान की **रक्षन्ते**-रक्षा करते हैं **उक्षणः**-सुखवर्षक ये **प्राञ्चः**-अत्यन्त गतिशील होकर। **मदन्ति**-उन्मत्त होती हैं **हि**-क्योंकि। **अजुर्याः**-हिंसित न हुई। **देवाः**-इन्द्रियां। **देवानाम्**-इन्द्रियों के। **व्रता+अनु**-व्रतों के अनुकूल ही। **गुः**-चलती हैं।

व्याख्या-इस मन्त्र में चार बातें कही गई हैं जो अत्यन्त सावधानता से मनन करने योग्य हैं–

1. इस शरीर में पांच अध्वर्यु हैं। अध्वर्यु उस ऋत्विक् को कहते हैं जो यजुर्वेद के द्वारा कर्म करता है। यजुर्वेद कर्मप्रधान वेद है, अतः यहां अध्वर्यु का अर्थ हैं कर्मेन्द्रियां। मनुष्य जीवन भी एक यज्ञ है। **'पुरुषो वाव यज्ञः' (छा०)**-मनुष्य जीवन सचमुच यज्ञ है। यजमान यज्ञानुष्ठान के लिए अध्वर्यु आदि ऋत्विजों की अपेक्षा करता है। इस यज्ञ में पांच अध्वर्यु-कर्मेन्द्रियां हैं और सात दूसरे विप्र-ऋत्विक्। सात विप्र हैं-पांच ज्ञानेन्द्रियां तथा मन और बुद्धि। यजुर्वेद में इनको सप्त ऋषि कहा है-**'सप्त ऋषयः प्रहिताः शरीरे'** [यजु.० ३४।५५]-सात ऋषि शरीर में रख दिए गए हैं।

2. इनका काम है ये **'प्रियं रक्षन्ते निहितं पदं वेः'**-आत्मा के गुप्त प्रियपद की रक्षा करते हैं। 'वि' का अर्थ है इच्छावाला। इच्छा चेतन जीव में सम्भव है, अचेतन जड़ कारणों आंख, नाक आदि में इच्छा नहीं हो सकती। ज्ञानेन्द्रियां कर्मेन्द्रियों के साथ मिलकर आत्मा के अभीष्ट की सिद्धि कर रही हैं। वह अभीष्ट गुप्त है। कौन इसे पहचानता है ? 'रक्षन्ति' के स्थान में 'रक्षन्ते कहकर वेद एक अद्भुत सूचना दे रहा है। आत्मा के अभीष्ट की रक्षा से ही इनकी रक्षा होती है। इनकी सफलता भी तो इसी में है कि आत्मा के अभीष्ट की सिद्धि हो। वास्तव में वेद ने एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण तत्त्व संकेत में सुझाया है। दूसरे की भलाई करने से वास्तव में अपनी भलाई होती है, अतः दूसरे की भलाई का अवसर मिलने पर भलाई करने से चूकना नहीं चाहिए। जिसका समय परहित में लगता है, उसके कल्याण की कल्पना तो करो।

3. 'प्राञ्चो मदन्त्युक्षणः' उत्तम गतियुक्त होकर सुखवर्षक इन्द्रियां उन्मत्त होती हैं। यदि वे बहिर्मुख कर दी जाएं तो बाह्य विषय सुख का हेतु बनती है। यदि अन्तर्मुख कर दी जाएं तो अन्तरात्मा का रस पिलाती हैं।

4. 'अजुर्या देवा देवानामनु हि व्रता गुः' जब ये ठीक-ठीक होती हैं तो एक-दूसरी के कार्य की साधिका बनती हैं। आत्मा का कारण होने से ही ये एक-दूसरी की सहायक होती हैं। बृहदारण्यकोपनिषद् (१।५।२१) में इस तत्त्व को बहुत सुन्दर रीति से सुलझाया है-अथातो व्रतमीमांसा। प्रजापतिर्हि कर्माणि ससृजे। तानि सृष्टान्यन्योन्येनास्पर्धन्त वदिष्यामेवाहमिति वाग्दध्रे। द्रक्ष्यांम्यहमिति चक्षुः। श्रोष्याम्यहमिति श्रोत्रम्। एवमन्यानि कर्माणि यथाकर्म। तानि मृत्युः श्रमो भूत्वोपयेमे, तान्याप्रोत्, तान्याप्ता मृत्युवारुन्धत्। तस्मात् श्राम्यत्येव वाक्, श्राम्यति चक्षुः, श्राम्यति श्रोत्रम्। अथेममेव नाप्नोत्, योऽयं मध्यमः प्राणः। तानि ज्ञातुं दध्रिरे। अयं वै नः श्रेष्ठ यः संचरँश्चासंचरँश्च न व्यथते, अथो न रिष्यति। हन्तास्यैव सर्वे रूपमसामेति, एतस्यैव सर्वे रूपमभवन् तस्मादेत एतेनाख्यायन्ते प्राणा इति। तेन ह व तत्कुलमाचक्षते यस्मिन्कुले भवति।।

अब इन्द्रियकर्म विचार का आरम्भ करते हैं। प्रजापति ने इन्द्रियां बनाईं। वे बनकर एक-दूसरी से स्पर्धा करने लगीं। वाणी ने निश्चय किया कि मैं केवल बोलूंगी ही। आंख ने निश्चय किया-मैं देखूंगी ही। कान ने धारणा की, मैं सुनूंगा ही। इसी प्रकार दूसरी इन्द्रियों ने अपने-अपने कर्म का निश्चय किया। मृत्यु ने थक... का रूप धारण करके उनको पकड़ा। वह उनके पास पहुंचा। उनके पास पहुंचकर मृत्यु ने उन्हें घेर लिया। इस वास्ते वाणी थकती है, आंख थकती है, कान थकता है, किन्तु मृत्यु इस मध्यम प्राण (सबका मध्यस्थ जीवनहेतु आत्मा) को प्राप्त नहीं हो सका। इन्द्रियों ने उसे जानना चाहा-अरे! यह उससे श्रेष्ठ है। गति करता हुआ और गति न करता हुआ यह दुःखित नहीं होता, नष्ट नहीं होता। अरे! हम सब इसका रूप बनें। वे सभी उसका रूप बन गईं। इसी कारण इन इन्द्रियों को प्राण कहते हैं। इसलिए जिस कुल में कोई होता है, उसको उसी कुल का कहते हैं।

आत्मा का रूप बनने का अभिप्राय है इसकी भांति कार्य करना, सचेष्ट होना। जो जिसका रूप होता है वह उसका विरोधी और परस्पर-विरोधी नहीं हो सकता। आत्मा के कारण आत्मा के देखने, सुनने, बोलने की शक्ति से युक्त होकर इन्द्रियां आत्मा का रूप बन रही हैं और इसी कारण अज्ञानी जन इन्हें आत्मा मानकर आत्मा के वास्तविक स्वरूप से वंचित हो जाते हैं।

–स्वाध्याय संदोह से साभार

मेरा गुरुतम लक्ष्य एवं आपकी अधीरता

-लेखक : आचार्य अग्नि व्रत नैष्ठिक वेद ज्ञान मन्दिर - भीनमाल (जालोर)

(गतांक से आगे)

इस कारण इसके प्रति मेरा वैराग्य निरन्तर बढ़ रहा है। हां, मैं यह अवश्य चाहता हूं कि कोई पूर्ण धार्मिक प्रतिभाशाली युवा मेरे इस कार्य को मेरे बाद आगे बढ़ाए, जो मेरे अन्तिम वर्षों में मुझसे इसे सीखे। उस विशेष परिस्थिति में वह उत्तराधिकारी युवा और यह न्यास व स्वयं वह मुझसे पढ़ाने का विशेष आग्रह व यदा-कदा उच्च वैज्ञानिक मंचों पर जाकर व्याख्यान देने का निवेदन करे तो मैं अपने स्वास्थ्य, साधना, स्वतन्त्रता व इच्छा के अनुकूल इसे आंशिक रूप से स्वीकार भी कर सकूंगा, परन्तु यह उसी समय निश्चित होगा।

चैत्र कृष्णा त्रयोदशी २०७१ (१८.०३.२०१५) को मेरे ऐतरेय ब्राह्मण वैज्ञानिक व्याख्यान (फाईनल) के २५ अध्याय ईश्वर कृपा से बड़े आनन्द और सफलता के साथ पूर्ण हो चुके हैं। इनमें मुझे लगभग २२ माह लगे हैं अभी १५ अध्याय शेष हैं। पृष्ठ संख्या की दृष्टि से इस ग्रन्थ का दो तिहाई भाग पूर्ण हो चुका है। इस प्रकार आशा है कि अनुकूलता रही तो एक वर्ष में यह वैज्ञानिक व्याख्यान पूर्ण हो जाएगा। मैं अब तक लगभग २००० पृष्ठ लिख चुका हूं। आशा है अभी १००० पृष्ठ और होंगे। इसके पश्चात् उसे कम से कम दो बार पढ़कर लगभग ३०० व ४०० पृष्ठ की व्यापक भूमिका (परिभाषिक एवं परिशिष्ट सहित) लिखनी होगी। यह भमिका ही सम्पूर्ण ग्रन्थ को सम... के लिए एक कुंजी होगी। इसका सहारा लेकर ही कोई अति प्रतिभाशाली वैज्ञानिक ही मेरे इस ग्रन्थ से अनेक विज्ञानों को प्रकाशित करने में समर्थ होगा। कोई संस्कृतज्ञ अथवा वर्तमान स्तर का वैदिक विज्ञान यदि तीव्र वैज्ञानिक बुद्धि से भी युक्त हो तो वह ब्राह्मण ग्रन्थों और वेदों को समझने के लिए एक ऐसी अद्भुत और नवीन परम्परा का बोध कर सकेगा, जिसके आधार पर पांच हजार वर्षों से लुप्त विज्ञान पुनः प्रकाशित हो सकेगा। इस भूमिका लेखन और व्याख्यान पठन में भी लगभग १ वर्ष तो लग ही जाएगा। इस प्रकार आगामी २ वर्ष तक मैं सभी आर्यों से आग्रह करता हूं कि वे किसी के भी द्वारा वैदिक व भारतीय संस्कृति पर प्रहार होते देखकर भी मुझसे किसी भी सहायता की अपेक्षा न करें। मैं अपने कार्य में बहुत व्यस्त रहता हूं। यह लेख भी अनिच्छापूर्वक आपको धैर्य बँधाने के लिए लिखना पड़ा है। मेरे पास वर्तमान विज्ञान के जो नवीन-नवीन शोध समाचार आ रहे हैं और जिनके भविष्य में प्रकाश में आने की मुझे सम्भावना है, उनसे मैं किसी भी प्रकार से भयभीत, विचलित अथवा आशंकित नहीं हूं बल्कि मैं और अधिक उत्साहित हूं। मैं देख रहा हूं कि आविष्कार जो अत्यन्त उच्च स्तर के एवं अभूतपूर्व हैं तथा जिन्हें दुनिया में अभी-अभी जाना गया है, उन्हें मैं अपने ऐतरेय व्याख्यान में लिख चुका हूं। इस लेख में उनका वर्णन न तो सम्भव है और न आवश्यक है। इस पर हमारे कुछ हितैषी चिन्तित हो सकते हैं कि जब मैं २-३ वर्ष बाद उन बिन्दुओं को किसी के समक्ष प्रस्तुत करूंगा तो वैज्ञानिक व प्रबुद्ध जन यही कहेंगे कि यह तो हम जान ही चुके हैं। इस बात से भी आर्यजनों को विचलित नहीं होना चाहिए। मुझे विश्वास है कि मेरा ऐतरेय ब्राह्मण व्याख्या सुव्यवस्थित, क्रमबद्ध रूप से एक ऐसा विस्तृत विज्ञान प्रस्तुत करेगा, जैसा इस समय सम्भवतः कहीं भी भूतल पर नहीं होगा। मेरी वैदिक शोधकर्त्ताओं और वर्तमान वैज्ञानिकों दोनों से ही पृथक् एक ऐसी शैली है, जिसके आधार पर ही मैं वेद को ईश्वरीय ज्ञान और सर्वविज्ञानमय सिद्ध करते हुए महर्षि ब्रह्मा से लेकर दयानन्द पर्यन्त ऋषियों की अद्भुत, वैज्ञानिकता को संसार के समक्ष प्रस्तुत करके आर्य व हिन्दू समाज के साथ-साथ भारतवर्ष का मस्तक विश्व में ऊंचा कर सकूंगा। मेरे शोध का उद्देश्य आर्ष ग्रन्थों में कमियां खोजना नहीं है बल्कि उनके गौरव को संसार में प्रतिष्ठित करना है। मैं आर्ष ग्रन्थों को स्वतः प्रमाण तो नहीं मानता हूं परन्तु मैं उनमें कमियां खोजूं, यह भी मेरा सामर्थ्य व उद्देश्य नहीं है। अब तक के २५ अध्याय के व्याख्यान में जिनमें अन्य भाष्यकारों को पशुबलि, हिंसा, मांसाहार, अश्लीलता व मूर्खता जैसी अनेक बातें दिखाई दी हैं, तो कोई उन्हें दुष्टजनों का प्रक्षेप बताकर पल्ला झाड़ लेते हैं। मुझे यह कहने में हर्ष हो रहा है कि मुझे इन २५ अध्यायों में एक कण्डिका तो क्या एक पंक्ति व एक अक्षर भी न तो प्रक्षिप्त प्रतीत हुआ है और न ही निरर्थक बल्कि मैंने उन प्रसंगों में सृष्टि विद्या के अनेक गूढ़ और अज्ञात रहस्यों को देखा और उद्घाटित किया है। इसके कारण मेरा आत्म विश्वास निरन्तर उच्चता प्राप्त कर रहा है। मैं केवल २५ अध्याय के बल पर और इसकी भूमिका लिखकर ही अधिक शीघ्र अपने लक्ष्य को पूरा करने की आशा रखता हूं परन्तु मैं नहीं चाहता कि आगामी १५ अध्यायों को मैं छोड़कर ग्रन्थ को अधूरा रखकर अधीर आर्यों को सन्तुष्ट करने में लग जाऊं। ऐसा करना इस ग्रन्थ के साथ न्याय नहीं होगा। यह बात मैं नहीं जानता कि मैं कैसे वैज्ञानिक मंचों पर जाकर अपनी बात रखूंगा, कौन मुझे वहां तक ले जाएगा, भारत सरकार का इसमें क्या सहयोग रहेगा, कौन सा साधन इस कार्य के लिए सेतु बनेगा? इन सब प्रश्नों को मैं ईश्वराधीन ही छोड़ता हूं क्योंकि सभी प्रश्नों का उत्तर केवल ईश्वर और समय के पास ही हो सकता है। मैं अपने उच्च आदर्श रूप महामानव, विश्वपुरुष, आत्मा की उच्चता की परिसीमा रूप, महत्तम योगी भगवान् श्री कृष्ण जी महाराज के-'कर्त्तव्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन' पर पूर्ण श्रद्धा रखते हुए पूर्ण निष्ठा व सर्वथा निष्काम भावना से अपने इस कार्य में लगा हूं। ईश्वर व ऋषियों का मुझे पूर्ण विश्वास है। मैंने अपने जीवन में सत्य का पूर्ण निष्ठा से पालन किया है, वह सत्यनिष्ठा ही मेरे संकल्प व आपके आस्था और विश्वास को अवश्य सत्य सिद्ध करेगी। हां, इतना अवश्य है कि मैं अपने लक्ष्य के लिए कभी भी असत्य का आश्रय कदापि नहीं लूंगा क्योंकि मैं महान् सत्य प्रतिज्ञ, वेदवेदांगत्वज्ञ मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् श्रीराम तथा सत्य के प्रबल पोषक अपने परोक्ष गुरु महान् वेदवेत्ता महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन चरित्रों की छाया में ही अब तक जीता रहा हूं। मेरा यह भी दृढ़ मत है कि बिना सत्य के पालन के ईशकृपा प्राप्त नहीं होती और ईशकृपा के बिना केवल प्रतिभा तथा संसाधनों के बल पर कोई भी ईश्वरीय ज्ञान को उद्घाटित करने में समर्थ नहीं हो सकता। धन सम्पत्ति तो मिथ्यावादियों के पास भी हो सकती है परन्तु सत्य विज्ञान कदापि नहीं हो सकता। इसलिए मैं आपसे पुनः निवेदन करता हूं कि गुप्त विज्ञान को खोजने के लिए मुझे मिला यह समय बहुत अल्प है, आप अधीर न हों। प्रचलित वैज्ञानिक परम्परा में जीने वाले तथा हजारों-लाखों सहयोगियों व सभी वांछित संसाधनों से युक्त महान् वैज्ञानिक भी एक-एक शोध कार्य में पूरा जीवन खपा देते हैं, तब मैं कहां से जादू की छड़ी लाकर वैदिक विज्ञान की लुप्त परम्परा को इतना शीघ्र खोजकर संसार को चमत्कृत कर दूं ? मेरे निर्धारित समय तक तो कम से कम शान्ति व धैर्य से रहें। मैं अपने स्वास्थ्य से ऊपर उठकर भारी पुरुषार्थ कर रहा हूं। सितम्बर १९९६ में विषपान की घटना के पश्चात् मैं कभी भी अपने शरीर को पूर्ण स्वस्थ अनुभव नहीं कर पाया हूं। मैंने बहुत संकट सहे हैं परन्तु फिर भी विश्राम नहीं किया। स्वास्थ्य का ध्यान, संयम, व्यायाम, प्राणायाम अवश्य यन्त्रवत् व्यवस्थित रहता है और इसी से शरीर काम भी कर रहा है। वैसे ईश कृपा से मैं स्वयमेव संयमादि से विष प्रभाव से जीवन को किसी भी गम्भीर रोग से बचाने में समर्थ रहा हूं। कृपया आप मुझे शीघ्रता के भार से और न दबाएं। मुझे स्वयं शीघ्रता है परन्तु यह कार्य शीघ्रता से होने वाला नहीं है। इस कारण आप भी ईश्वर पर विश्वास करके अपना सहयोग व विश्वास बनाए रखें। ईश्वर हम सबको ऋषि दयानन्द के स्वप्न साकार करके वेद व भारत को विश्व प्रतिष्ठित करने का सामर्थ्य प्रदान करे।

सम्पादकीय......

मनुष्य की अशान्ति के कारण

आज के युग की प्रधान समस्या तनाव है। तनाव व्यक्ति के शरीर और मन में अनेक बीमारियों को जन्म देता है। मानव जितना अशान्त है, पशु पक्षियों में उसका शतांश देखने को नहीं मिलता। पशुओं में संवेग उपजते हैं, वे भी कभी-कभी थोड़े-थोड़े समय के लिए किन्तु मनुष्य वर्षो-वर्षो तक तनावग्रस्त जीवन को जीता नजर आता है। उस तनाव के कारण उसकी नींद और भूख गायब हो जाती है। कई बार तो मानव तनाव से ग्रस्त होकर आत्महत्या जैसा जघन्य अपराध करने के लिए तैयार हो जाता है। मनुष्य को तनाव भी अनेकों प्रकार के होते हैं। कहीं पर मनुष्य धन न होने के कारण तनावग्रस्त रहता है, कहीं पर काम से ग्रसित होकर तनाव में रहता है, कहीं क्रोध के कारण तो कहीं पर लालच के कारण तनावग्रस्त रहता है।

आज मनुष्य धन इकट्ठा करने की दौड़ में लगा हुआ है। घरों में अनेक प्रकार के पदार्थों के अम्बार लगे हुए हैं। पदार्थों से व्यक्ति अपने ड्राईंग हाल सजाने में लगा हुआ है। संसारिक विषयों के प्रति मनुष्यों के लगाव ने उसे पागल बना दिया है। तृष्णा एक ऐसी प्यास है जो कभी पदार्थ से नहीं बुझती। तृष्णा की प्यास आशाओं के बल पर जिन्दा रहती है। आदमी आशाओं के पुल बनाता है। सौ वाला हजार की इच्छा करता है, हजार वाला लाख की इच्छा करता है, लाख वाला करोड़ कमाने की इच्छा करता है, करोड़ वाला अरबपति और अरबपति से खरबपति बनना चाहता है। व्यक्ति के धन के प्रति जैसे-जैसे आकांक्षा बढ़ती जाती है वैसे-वैसे वह अनैतिक कार्यों का सहारा लेना शुरू कर देता है। अपनी मेहनत और ईमानदारी को छोड़कर वह गलत और अनैतिक कार्यों से धन कमाना शुरू कर देता है। जब उन अनैतिक कार्यों का परिणाम सामने आता है, अपनी करनी का फल उसे भोगना पड़ता है तो फिर वह तनाव से ग्रस्त होकर आत्महत्या करके अपना जीवन समाप्त करना चाहता है। अगर पहले ही वह इस बात को समझ कर अनैतिक कार्यों का सहारा लेना छोड़ दे और अपनी मेहनत और ईमानदारी से कार्य करे तो वह प्रसन्नतापूर्वक अपना जीवन बिता सकता है। अमेरिका जैसे धनी देशों में 40 प्रतिशत व्यक्ति मानसिक रोगों के शिकार हैं। वहां भौतिक विकास चरम सीमा पर है। साथ ही वैषयिक तृष्णा आकाश को छू रही है। विषयों की तृष्णा को भोग के द्वारा शान्त नहीं किया जा सकता। वह तो पानी की आग के समान है। किसी पदार्थ में आग लग जाए तो उसे पानी के द्वारा बुझाया जा सकता है,किन्तु यदि पानी में ही आग लग जाए तो उसे पानी से भी नहीं बुझाया जा सकता है। जब विषय भोगों के कारण मनुष्य में अतृप्ति पैदा होती है तो उसे विषयों और पदार्थों के द्वारा भी तृप्त नहीं किया जा सकता। यदि किसी स्प्रिंग को सीमा के अन्दर खींचा जाता है तो वह छोड़ने पर अपनी सामान्य स्थिति में आ जाता है, किन्तु यदि सीमाओं को पार कर खींचा जाता है तो वह अपनी आकुञ्चन क्षमता को छोड़ देता है।

कहीं पर भी देख लो आज मनुष्य शान्ति की तलाश में भटक रहा है। वह संसारिक पदार्थों धन-सम्पत्ति, गाड़ी बंगले, तथा अन्य सुख के साधनों में शान्ति की तलाश करता है। परन्तु उसमें कहीं पर भी उसे शान्ति नहीं मिलती। यदि व्यक्ति स्थाई सुख और शान्ति चाहता है तो उसे विचार करना होगा कि हमारे दु:ख और अशान्ति का मूल कारण क्या है। कारण पता कर यदि हम उसका निवारण कर सकें तो दु:ख और अशान्ति का स्थाई हल हो जाएगा और व्यक्ति को स्थाई सुख और शान्ति उपलब्ध हो जाएगी। मानव के दु:खों का मूल कारण उसके सूक्ष्म शरीर में पड़े अविद्या आदि क्लेश हैं। जब तक मनुष्य की चित्त भूमि में इन क्लेशों का मूल बीज रहेगा मानव कभी भी तनाव अशान्ति जैसे दुखों से मुक्ति नहीं पा सकता। इन क्लेशों का निदान महर्षि पतञ्जलि द्वारा प्रतिपादित अष्टांग योग के यम और नियम से शुरू होता है जो लोक व्यवहार में अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह का पाठ पढाता है। यह शिक्षा ऋषि मुनियों की शिक्षा है।

भोग की प्रवृत्ति में जीने वाला मनुष्य अपरिग्रह की नहीं परिग्रह की शिक्षा देता है।

जो व्यक्ति अष्टांग योग के पहले दो भाग यम-नियम को जानकर उसके उपर आचरण करना शुरू कर देता है उस मनुष्य के जीवन का पुष्प खिलने लगता है और उस खिले पुष्प की सुगंध चारों ओर फैलने लगती है। वह व्यक्ति कभी भी तनावग्रस्त नहीं हो सकता। धार्मिक व्यक्ति का जीवन आनन्द से भर जाता है। धर्म जीवन जीने की एक ऐसी कला का नाम है जो व्यक्ति के लोक और परलोक को सफल कर देती है। धार्मिक मनुष्य के जीवन में परिवर्तन आने लगता है। वह कोई भी कार्य ऐसा नहीं करता जिससे उसे पछताना पड़े।

जो व्यक्ति यम-नियमों को अपनाकर धर्म का आचरण अर्थात् अहिंसा,सत्य, चोरी न करना, अपनी इन्द्रियों को वश में करना और अपरिग्रह अर्थात् लोभ को त्याग कर मेरा-मेरा की भावना को त्याग देता है तो उसका जीवन सुखी बन जाता है। यही मनुष्यता है। अगर इन उपदेशों को प्रत्येक मनुष्य अपने जीवन में धारण कर लें तो तनाव, अशान्ति तथा दु:ख से छुटकारा पाया जा सकता है। जब तक मनुष्य में भोग विलास की प्रवृत्तियां रहेंगी तब तक उसका मन अशान्त रहेगा। इस तनाव के कारण मनुष्य की जीवन दु:खमय नरक बन जाता है। इसलिए प्रत्येक मनुष्य को विचार करना चाहिए कि उसके अन्दर तनाव और अशान्ति किन कारणों से है। उन कारणों का पता लगाकर उसे दूर करने का प्रयास करना चाहिए। मनुष्य तभी मनुष्य कहलाने का अधिकारी है जब वह अपने जीवन की समस्याओं का समाधान निकाल लें। जब तक वह अपनी समस्याओं पर विजय नहीं पा सकता तब तक वह सुखी नहीं हो सकता।

-प्रेम भारद्वाज संपादक एवं सभा महामन्त्री

वेद पारायण यज्ञ का रजत जयन्ती महोत्सव
(16 मई से 20 मई 2015)

परमात्मा की महत्ती कृपा एवं गुरुजनों के आशीर्वाद के फलस्वरूप मैंने अपने जन्म स्थान, ग्राम-नेनोरा, ज़िला मन्दसौर (म.प्र.) में सन् 1999 से 2015 तक प्रतिवर्ष एक वेद पारायण यज्ञ तथा वेद प्रचार का आयोजन किया जो निर्विघ्न रूप में सम्पन्न हुआ है। इस वर्ष मई 2015 में पच्चीसवें वेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया जा रहा है। इस वेद पारायण यज्ञ को रजत जयन्ती महोत्सव के रूप में विशाल रूप से मनाने का निश्चय हुआ है। जिसमें प्राकृतिक चिकित्सा एवं योग साधना शिविर, आर्य वीर दल का शक्ति प्रदर्शन, विशाल शोभा यात्रा, आर्य युवक सम्मेलन, आर्य महिला सम्मेलन, सत्यार्थ प्रकाश सम्मेलन तथा भजन-प्रवचन-उपदेशादि का कार्यक्रम रहेगा।

इस छोटे से ग्राम में 25 दैनिक अग्निहोत्री परिवार 25 यज्ञकुण्डों पर यजमान के रूप में यज्ञ को सम्पन्न करेंगे। लगभग 50 विद्वानों-सन्यासियों एवं भजनोपदेशकों को आमन्त्रित किया गया है जिनके भजन-उपदेशादि से आर्यजन लाभान्वित होंगे तथा प्राकृतिक चिकित्सा योग शिविर का आयोजन किया गया है।

दिनांक 16 मई को 'पिपलिया मण्डी' में विशाल शोभा यात्रा, (नगर कीर्तन) का आयोजन किया है। 18 से 20 मई तक प्रात: एवं सायंकाल यज्ञ-भजन और प्रवचन तथा दिन में 1 से 3 बजे तक 18 मई को युवक सम्मेलन 18 मई को महिला सम्मेलन तथा 19 मई को सत्यार्थ प्रकाश सम्मेलन किया गया है। 20 मई को प्रात: 9 बजे यज्ञ की पूर्णाहुति तथा 1 से 11 बजे तक भजन-उपदेश तथा सम्मान, तत्पश्चात्, प्रीति भोजन का आयोजन किया गया है। महोत्सव में सम्मिलित होने वाले सभी श्रोताओं के लिए भोजन की तथा बाहर से आने वाले महानुभावों की भोजन एवं आवास व्यवस्था भी रहेगी, अत: अधिक से अधिक इस शुभ अवसर का लाभ उठाएं। **-विनीत सोम देव शास्त्री**

भारतीय महीनों के नाम और उनका औचित्य

-ले० श्री देवेन्द्र प्रसाद शास्त्री 'सावित्रेय' रांची

(गतांक से आगे)

मानो भादो और भाद्रपद नक्षत्र कह रहे हों ''हे मनुष्य! यदि तुम प्रसन्न और सम्पन्न सज्जन बनना चाहते हो, तो मेरे जैसा कल्याणकारी पद बढ़ाओ। धीर, वीर, गम्भीर और आत्मज्ञ परमात्मदर्शी बनकर प्राप्त किए हुए सदगुणों की वृष्टि करो, तभी-अभाव, अज्ञान और अन्याय से मुक्त होकर सुखी हो सकते हैं।''

'भाद्र' नक्षत्र और 'भाद्रपद' की पूर्ण व्याख्या 'आश्विन' मास में की गई है। ''आश्विन'' शब्द 'अश्' धातु से बना है, जिसका अर्थ है- 'व्यापति और संघात'। यह पद हमें बताता है कि ईश्वर सब जगह व्याप्त है, वही सब में समाया हुआ है। मनुष्य स्वकर्मानुसार उसी के अधीनस्थ रहकर नियत समय तक अन्नादि भोगों को भोगता है, और उसी महान-तत्व में विलीन हो जाता है। इस मास की पूर्णिमा 'आश्विनी' नक्षत्र में होता है। ये हमें निर्देश करते हैं-हम उस सर्वव्यापी शरीरस्थ परमात्मा का साक्षात्कार कर जीवन को मंगलमय बनावें। बहुतायत से अन्नोत्पादन करें। अपनी अनन्त इच्छाओं पर विजय प्राप्त करें। शरीर को सुन्दर बनावें। इनमें किसे उपास्य बनाएं या छोड़ दें ? हमारा शरीर क्या है ? इसका जवाब ''कार्त्तिक'' देता है। ''कार्त्तिक'' पद का अर्थ है-''चमड़ा, बाहरी आवरण।'' यह पद हमें बतलाता है कि शरीर उस अविनाशी आत्मा का बाहरी आवरण है, पोशाक है। 'कार्त्तिक' मास की पूर्णिमा ''कृतिका' नक्षत्र में चन्द्रमा के भ्रमण करते हुए आने से होता है। हम शरीर को सुन्दरता से र न्ने के बाद ऊर्जस्वी भी बनाएं, बलशाली भी बनें। परन्तु शरीर और आत्मा इन दोनों में उपास्य किसे बनाएं, किसकी खोज करें ? इसका जवाब ''मार्गशीर्ष'' माह में उपलब्ध हैं। शरीर बलशाली और सुन्दर बनाने के बाद मन और आत्मा की ओर भी पद बढ़ाने की प्रेरणा ''मार्गशीर्ष'' देता है। ''मार्गशीर्ष'' में 'मार्ग' और 'शीर्ष' दो शब्दों का समन्वय है।

'मार्ग' का प्रचलित अर्थ है- रास्ता और केन्द्र से है। जो मुख्य हो शीर्ष स्थानीय हो, उसी की खोज करनी चाहिए, तभी सहनशीलता की प्राप्ति होती है।

वह खोज तभी पूर्ण होगी, जब शरीर स्वस्थ और निरोगी रहेगा। निरोगी और स्वस्थ ही बल प्राप्त कर सहनशील बनता है और क्षमाशील बनकर उस खोज को पूरा करने योग्य हो पाता है। वेदों में उस सर्वोत्कृष्ट केन्द्र तक पहुंचने के लिए मुख्य रूप से दो मार्ग बतलाए गए हैं। उन्हीं रास्तों से अनेक राहें धार्मिक क्षेत्र में फूट पड़ी हैं। एक मार्ग को 'श्रेय मार्ग' और दूसरे (मार्ग) को 'प्रेयमार्ग' कहते हैं। परमात्मा को प्राप्त करने के उद्देश्य से ''श्रेयमार्ग'' पर योगी, वैरागी और यति-मुनि चलते आए हैं। यह मार्ग कठिन है। इस मार्ग पर वही व्यक्ति चल सकते हैं, जिनमें लौकिक प्रलोभन न हो। लोकैषणा वित्तैषणा और पुत्रैषणा की इच्छाओं से निवृत्त होकर ऊपर उठ चुके हैं और सन्यास धर्म के योग्य हो गए हैं, आदि।

''प्रेयमार्ग'' पर उसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए गृहस्थ व्यक्ति भी चलते आए हैं। यह राह सम्पदाओं से परिपूर्ण और आकर्षक तथा विपत्तियों से भरा हुआ कहा गया है। इस राह पर निष्काम, योगी बनकर गृहस्थ भी निर्लिप्त भाव से कर्म करते हुए बढ़ते आए हैं। इसके राही सांसारिक माया की ओर आकृष्ट (प्रवृत्त) होकर अपनी कामनाओं की तृप्ति करते हुए, मातृ-पितृ ऋण, देव ऋण और ऋषि ऋण से उऋण होते हुए सच्चिदानन्द की ओर बढ़ते रहे हैं और अन्त में सांसारिक पदार्थों से विरक्त होकर प्रभु भक्त बन गए हैं। वे लोग संसार में हंस की तरह चले हैं और भोगों से निर्लिप्त रहें। ऐसे प्रभु भक्त पथिकों से भारत का इतिहास भरा पड़ा हुआ है।

प्राचीन काल में राजे-महाराजे और ऋषि कुमारों ने इन मार्गों पर चलकर परिवार, समाज, देश और विश्व में सुख-शान्ति को निरन्तर कायम रखते सुने जाते हैं। अज्ञानता और विवशतावश यह प्राचीनतम क्रम छिन्न-भिन्न हो गया और 'धर्म' के नाम पर अनेक साम्प्रदायिक राहें फूट पड़ी हैं। मार्ग चाहे कितने भी क्यों न हों, परन्तु सभी सही मार्ग उस सर्वोत्कृष्ट केन्द्र की ओर ही पहुंचाते हैं, जो सदैव एकता में अनेकता और अनेकता में एकता का शंख नाद फूंकता हुआ राष्ट्र में एकता का मानव संदेश बिखेरता आया है। आज ज़रूरत आ पड़ी है कि धर्मवेत्ता लोग स्वयं उन रास्तों पर चलकर चारों ओर व्याप्त, भ्रष्टाचार, हिंसा, व्यभिचार, अभाव, अज्ञान, अन्याय से पीड़ित लोगों को नई रोशनी दिखाएं। उनसे लोगों को मुक्त कराएं। छिन्न-भिन्न हो रही भारत की प्राचीन गौरवगाथा को सजीवता प्रदान करें। ऐसा तभी हो सकेगा जहां अभी तक के क्रमबद्ध मासोपदेश की भावनाओं को ध्यान में रखेंगे। 'श्रवण' और 'मनन' ही व्यक्ति को स्वस्थ और सुदृढ़ बनाने के लिए पर्याप्त नहीं हैं, क्योंकि जन्म-जन्मान्तरों की संचित वासनाएं अर्थात् संवेदनात्मक प्रतिक्रियाएं आदतें जीवन को बदलने नहीं देती। भक्ति के भले-बुरे कर्मों के 'संस्कार' चित्त में वास किए हुए हैं, वही रहते आए हैं, यहीं वासना शब्द से शास्त्रों में अभिहित हैं। उन्हीं वासनाओं से व्यक्ति अनेक कष्ट उठाते हैं। उन वासनाओं को यदि कोई हटाना चाहे तो उत्तम विचारों और भगवान का उपासना से अपने को नियंत्रित कर सकता है। उन्हें हटाने का मार्ग यही है कि व्यक्ति गलत आदतों को छोड़ता जाए और अच्छी आदतों को अपनाता जाए। सीखे हुए उच्च विचारों को अपने जीवन में ढालने और दैनिक जीवन को उन विचारों के अनुरूप मोड़ने की क्रिया को ही 'निदिध्यासन' कहते हैं। इसी में सतत् प्रवाह रूपी ज्ञान की प्राप्ति हो पाती हैं और मन-मस्तिष्क में फैले हुए अज्ञान तथा कुविचार के भाव हटते जाते हैं। शायद यही कारण रहा हो 'मार्गशीर्ष' का प्रचलित नाम 'अगहन' पड़ने में भी।

'मार्गशीर्ष' मास को जहां देहाती भाषा में 'अगहन' कहते हैं, वहीं संस्कृत भाषा में 'आग्रहायण' कहते हैं। 'अगहन' और 'आग्रहायण' की भी व्युत्पत्ति-विश्लेषण इस पर प्रकाश डालते हैं। 'अगहन' में दो शब्द 'अग' और 'हन' है। 'अग' के अनेक अर्थों में एक अर्थ 'सांप' भी हैं। 'हन' का अर्थ-मारना, नष्ट करना, समाप्त करना आदि है। तब इस 'अगहन' का भी यही भाव लिए हुए अर्थ हो जाता है-''पाप कर्म रूपी वासनामयी सर्पों को मारो, नष्ट करो। यहां कहने का भाव यह छिपा हुआ है कि कुवासनाओं को शान्त करो, चाहे वह प्राचीन मार्ग हो अथवा आधुनिक जिस मार्ग से चल कर उन्हें शान्त और नियन्त्रित किया जा सके वही मार्ग अपनाओ। उस मार्ग का चयन स्वयं करो अथवा प्राचीन महर्षियों के पुराने मार्ग को वरण करो, जिस पर वे लोग चले थे और सुखी जीवन की प्राप्ति कर संसार में मैत्री, करुणा, मुदिया की स्थापना की थी। 'आग्रहायण शब्द विचारणीय महत्त्व रखता है। 'आग्रह' और 'अयण' का यह योग है। 'आग्रह' का अर्थ होता है- निवेदन, प्रार्थना, हठ, दिशा-निर्देशन, तत्पर और उत्सुक तथा 'आयण' का गति, भूमि, निवास, स्थिति, उद्यम आदि। तब इस 'आग्रहायण' का अर्थ हो जाएगा-''उत्सुकता की स्थिति प्राप्त करने के लिए तत्पर रहने का स्मरण दिलाने वाला मास।'' इस मास की पूर्णिमा चन्द्रमा के घूमते हुए 'मृगशिरा' नक्षत्र में आ जाने से होता है।

दसवां महीना ''पौष'' है। इसे प्रचलित भाषा में 'पूष' कहते हैं। ''पौष'' शब्द 'पूस' धातु से बना हुआ है, 'पूस' इसी का अपभ्रंश रूप है। ''पौष'' का अर्थ है-निरन्तर पुष्ट करना, पुंसत्व को प्राप्त करना, पोषण करना। जो सभी के पालक-पोषक पूषा रूप परमात्मा है। वही चराचर सृष्टि की प्राकृतिक वस्तुओं और प्राणियों की पुष्टि करता है। इस माह में सभी वस्तुएं पुष्ट होती देखी जाती हैं। वही 'पौष' मास के रूप में 'पूषा' देव मनुष्यों में उच्च विचारों को पुष्ट करने की शिक्षा देता है, पौरूषता की प्राप्ति का भी बोध कराती है। सुख-दुःख को सहने के लिए प्रेरित करती है। जब कोई भी व्यक्ति दसों महीनों के उपदेशानुसार जीवन निर्माण कर लेता है, तब अपने अन्दर में उच्च विचारों को और आत्मिक पौरूषता को भी पुष्ट कर लेगा, तब वह 'परम-पद' को पाने योग्य हो सकता है। जब कोई भी व्यक्ति उस परम-पद को जीवन में ही प्राप्त कर लेता है, तब उनके लिए भी संसार में कौन कार्य करना शेष रह जाता है ?

(क्रमशः)

स्वर्ग के सम्बन्ध में पौराणिक कल्पनाएं

-ले० महात्मा चैतन्यमुनि सुन्दर नगर, (हिमाचल प्रदेश)

देवी भागवत पुराण में स्वर्ग, बैकुण्ठ तथा शिवजी के कैलाश की स्थिति हिमालय पर्वत पर बताई है-एक सृष्टि समुत्पाद्यो भगवानकमलोदभवः। चकार ब्रह्मलोकं च मेरू श्रृंगे मनोहरम्। बैकुण्ठ भगवान्विष्णु रमारमण मुत्तमम्। कीड़ास्थानं सुरम्यं च सर्वलोकको परिस्थितम्। शिवोऽपि परमं स्थानं कैलासाख्यं चकारह। समासाद्य भूतगणं विजहार यथा रूचि। स्वर्गस्त्रिष्टयो मेरू शिखरोपरि कल्पितः। तच्च स्थानं सुरेन्द्रस्य नानारत्न विराजितम्।।

(स्क०३अ०११)

कमलोद्भव देव ब्रह्मा जी ने सृष्टि उत्पन्न की, उनका ब्रह्मलोक भी हिमालय पर्वत पर है। विष्णु भगवान का क्रीड़ास्थल भी वहीं पर सबसे ऊपर है। शिवजी ने अपना श्रेष्ठ स्थान कैलाश भी वहीं पर बनाया हुआ है जहां वे भूत अर्थात् भूतिया व भाटिया जाति के लोगों में रहते हैं। इन्द्र का स्वर्ग भी मेरू पर्वत पर तिब्बत पर माना जाता है। जहां अनेक प्रकार के दिव्य रत्न भी विद्यमान हैं।

इस प्रकार पुराणों में भी स्वर्ग को स्थान-विशेष ही माना गया है। पुराणों के इस बैकुण्ठ-स्वर्ग में चर्चा है कि वहां सनकादिकों ने क्रोधित होकर जय-विजय को श्राप दिया। इस पर महर्षि लिखते (ग्याहरवां समुल्लास) हैं-'जब बैकुण्ठ में राग द्वेष, क्रोध, ईर्ष्या दुःख नहीं हैं, तो सनादिकों को बैकुण्ठ के द्वार में क्रोध क्यों हुआ ? जो क्रोध हुआ, तो वह स्वर्ग ही नहीं। ...जब शाप लगा कि तुम पृथिवी में गिर पड़ो। इसके कहने से यह सिद्ध होता है कि वहां पृथिवी न होगी। आकाश, वायु, अग्नि और जल होगा, तो ऐसा द्वार मन्दिर और जल किसके आधार थे ? ....पुराणों में कहा गया है कि स्वर्ग में कुछ भी नहीं मिलता, जो दानादि दिया गया हो वही मिलता है। इस पर महर्षि कहते हैं-'उस तुम्हारे स्वर्ग से यही लोक अच्छा, जिसमें धर्मशाला है, लोग दान देते हैं...तुम्हारे कहने प्रमाणे स्वर्ग में कुछ भी नहीं मिलता। ऐसे निर्दय कृपण कंगले स्वर्ग में पोपजी खराब होवें। वहां भले मनुष्यों का क्या काम ?....

पौराणिक मत वालों ने स्वर्ग तो एक ही माना है मगर नरक 28 मानें हैं जिनकी सूची भागवत में (5-26-7) इस प्रकार दी है- 'तमिस्त्र, अन्धतामिस्त्र, रौरव, महारौरव, कुम्भीपाक, कालसूत्र, असि, पत्रवन, सूकरमुख, अन्धकूप, कृमिभोजन, सन्देश, तप्तसूर्मि, वज्रकण्टकशालम्मली, वैतरणी, पूयोद, प्राणरोध, विशसन, लालाभक्ष, सारमेयादन, अवीचि, अयः पान, क्षारकर्दम, रक्षोगण भोजन, शूल, प्रोत, दन्दशूक, अवट निरोधन, पर्यावर्तन, सूचीमुख।' विष्णु-पुराण (2-26- 2 से 6) में 28 नरक इस प्रकार बताए हैं- 'रौरव, सूकर, रोध, ताल, विशसन, महाज्वाल, तप्त-कुम्भ, लवण, विलोहित, रूधिराम्भ, वैतरणी, कृमीश, कृमिभोजन, असिपत्रवन, कृष्ण, लालाभक्ष, दारूण, पूयवह, पाप, वन्हि-ज्वालज, अधःशिरा, सन्दर्भ, मालसूत्र, तमस, आवीचि, श्वभोजन, अप्रतष्ठि, अप्रचि।'

वास्तव में इस प्रकार की कल्पनाएं निराधार एवं अविश्वसनीय हैं। व्याकरण शास्त्रानुसार 'स्वर्ग' शब्द 'स्वर्' उपपद में 'गम्लृ-गतौ' धातु से 'ड प्रकरणेऽन्येष्वपि दृश्यते। अ- 3-248 वार्तिक सूत्र से 'ड' प्रत्यय के योग से बनता है। गति के ज्ञान-गमन-प्राप्ति तीन अर्थ होते हैं। 'स्व' सुख का अनुभव होना, सुख में प्रविष्ट होना, सुख की प्राप्ति होना ही स्वर्ग अर्थात् सुख है। इसी प्रकार 'स्वर्गलोक' का अर्थ है। 'लोकृ दर्शने' धातु से लोक शब्द बनता है। जिसका अर्थ 'स्थान' है। जहां स्वर्ग प्राप्त होता है-सुख प्राप्त होता है वह स्वर्गलोक है। स्थान से यहां किसी विशेष स्थान से अभिप्राय नहीं है बल्कि जिस अवस्था में हमें सुख प्राप्त हो वही स्वर्ग है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी अपने ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के 'स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश' में लिखते हैं-'स्वर्ग' नाम सुख-विशेष भोग और उसकी सामग्री की प्राप्ति का है। 'नरक' जो दुःख विशेष भोग और सामग्री को प्राप्त होना है। सत्यार्थ प्रकाश के नौवें समुल्लास में वे मुक्ति के प्रसंग में स्वर्ग-नरक की व्याख्या करते हुए लिखते हैं-'मुक्ति में जीवात्मा निर्मल होने से पूर्ण ज्ञानी होकर उसकी सब सन्निहित पदार्थों का भान अर्थात् यथावत् होता है। यही सुखविशेष 'स्वर्ग' और विषयतृष्णा में फंसकर दुःख विशेष भोग करना 'नरक' कहाता है। 'स्वः' सुख का नाम है, 'स्वः सुखं गच्छति यस्मिन् स स्वर्गः,' अतो विपरीती दुःखभोगो (यस्मिन् स) नरक इति जो सांसारिक सुख है वह सामान्य स्वर्ग और जो परमेश्वर की प्राप्ति से आनन्द है, वही 'विशेष स्वर्ग' कहाता है। यहां पर महर्षि जी ने स्वर्ग को भी दो भागों में बांटकर बहुत ही सुन्दर एवं सार्थक विचार प्रस्तुत करके संसार को उपकृत किया है।

लोक शब्द का अर्थ है 'जो देखा जाए जो जाना जाए।' इसके भाव हम इस प्रकार से समझ सकते हैं-स्थान, अवस्था या काल, सुख-विशेष की अवस्था, प्रकाश की अवस्था आदि। लोक शब्द का व्यवहार बहुत से प्रसंगों में किया जाता है, जैसे-कन्या पितृलोक को छोड़कर पतिलोक को जा रही है आदि। जैसे स्वर्ग-लोक कोई स्थान विशेष नहीं है उसी प्रकार नरक भी कोई स्थान विशेष नहीं है। स्वर्ग का अर्थ सुख है इसलिए नरक का अर्थ दुःख हुआ क्योंकि नरक शब्द स्वर्ग का विपरीतार्थक है। रामायण के सुप्रसिद्ध टीकाकार गोबिन्दराज ने नरक का अर्थ इस प्रकार किया है-अत्र नरकः शब्देन दुखं लक्ष्यत्रे-यहां नरक शब्द का अर्थ दुःख है। महर्षि यास्कजी ने निरूक्त में लिखा है-नरकंन्यरकं नीचैर्गमनम् इति वा। (1-3-11) अर्थात् दुःख, अधःपतन या अवनति का नाम नरक है। नरक का सीधा सा अर्थ है-नीचे जाना, पतन का लोक, निरूक्त में भी कहा है-नीचे जाना, सुख का अभाव।

स्वर्ग तथा मुक्ति के लिए वेदों में अन्य शब्द भी आए हैं-'सुकृतस्य लोके' (ऋ. १०-८५-२४) अर्थात् पुण्य कर्मों के लोक में। 'अमृतस्य लोके' (ऋ. १०-८५-२०) अर्थात् अमर लोक में प्रविष्ट हों। निरूक्त में (2-14) भी स्वर्ग के पर्यायवाची नाम, द्यौ तथा सुकृतस्य-लोक दिए हैं। मीमांसा में (6-1-1) 'स्वर्ग' सुख विशेष को माना गया है। स्वर्ग शब्द से स्थान-विशेष व वस्तु विशेष का ग्रहण मीमांसा को स्वीकार्य नहीं है। वेद के अनेक मन्त्रों में द्यौलाक, ब्रह्मलोक, स्वर्गलोक, मोक्ष तथा सुकृतलोक आदि की चर्चा की गई है। ...बृहस्पतेरूत्तमं नाकं ँरूहेयम्, इन्द्रस्योत्तमं नाकं ँरूहेयम्....(यजु-09-10) बृहस्पति और इन्द्र अर्थात् जो ज्ञानवान् व जितेन्द्रिय को विशेष स्वर्ग मिलता है, वह मुझे प्राप्त हो। महर्षि दयानन्द जी ने नाकः (यजु० 15-49) को मोक्ष सुख लिखा है। असौ स्वर्गाय लोकाय स्वाहाः। (यजु० 35-22) यहां पर महर्षि जी ने स्वर्ग का अर्थ भी मोक्ष-सुख किया है। स्वर्गलोकेः (यजु० 23-20) सुखमय लोक। सुकृतस्य लोके। (यजु० 15-50) पुण्य कर्मों से अर्जित लोक। येन स्वः स्तभितं येन नाकः (यजु० 32-6) यहां पर स्वः का अर्थ सुख तथा नाकः का अर्थ सब दुःखों से रहित मोक्ष किया है। महर्षि जी ने बहुत से स्थानों पर अमृतम् का अर्थ भी (यजु० 32-10, 25-13) मोक्ष सुख किया है। अमरकोष के अनुसार-स्वरव्ययं स्वर्गनाकत्रिदशालयाः। सुरलोको द्यौर्दिवो द्वेस्त्रियां त्रिविष्टपम्। (16) अर्थात् स्वः, अव्यय, स्वर्ग, नाक, त्रिदिव, त्रिदशालय, सुरलोक, द्यौ, दिवः और त्रिविष्टप आदि शब्द एक ही पदार्थ के वाचक हैं। स्वर्ग किसे प्राप्त होता है। इस सम्बन्ध में ऋग्वेद में आया है-अविन्दद् दिवो....इन्द्रः परीवृता द्वार इषः परीवृताः।। (ऋ० 1-30-3) ज्ञानी पुरुष शरीरस्थ प्रभु का दर्शन करता है, जितेन्द्रिय बनकर वह प्रभु-प्रेरणा को सुनता है और स्वर्ग द्वारों को खोलने वाला होता है।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

जम्मू कश्मीर में वेद प्रचार की धूम

प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी वेद प्रचार मण्डल राजौरी पुंछ की ओर से वेद प्रचार निम्न स्थानों एवं आर्य समाजों में किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ 3, 4, 5 अप्रैल आर्य समाज लम्बेड़ी से किया गया। यज्ञ-हवन-भजन-प्रवचन, ध्वजारोहण श्री आत्म प्रकाश जी प्रधान वेद प्रचार मण्डल के द्वारा और मुख्य अतिथि विधायक श्री रविन्द्र रैना जी का स्वागत और धर्म सम्मेलन, ऋषि लंगर भारी संख्या में जनता ने भाग लिया। 5-6 अप्रैल आर्य समाज बारवर का वार्षिकोत्सव प्रातः यज्ञ हवन भंडारा हुआ। 6-7 अप्रैल गांव ऐनपुर (कांगड़ी) श्री नरेश के घर स्व. अपने पिता श्री बिहारी लाल की पुण्य स्मृति में वेद प्रचार 7-8 अप्रैल आर्य समाज कांगड़ी श्री देव राज आर्य के घर वेद प्रचार हुआ और आर्य समाज का चुनाव भी हुआ। प्रधान सूबेदार गिरधारी लाल नरवाल, मंत्री देव राज आर्य, कोषाध्यक्ष श्री लाल चन्द कुल ग्यारह सदस्यों की सभा बनाई गई और 8-9 अप्रैल को गांव टोकव-याड में श्री रणवीर शुर सुपुत्र स्व. मा. तपस्वी राम के घर वेद प्रचार हुआ। 9-10 अप्रैल आर्य समाज नौशहरा में वेद प्रचार रात्रि में आर्य समाज लम्बेड़ी से भी एक मेटाडोर भर कर आर्य सज्जनों की आई। रात्रि को सफल कार्यक्रम हुआ। प्रातः यज्ञ-हवन भजन प्रवचन इत्यादि। 10-11 अप्रैल आर्य समाज चिहियाड़ में वेद प्रचार और आर्य समाज चिटियाड़ का चुनाव भी सम्पन्न हुआ, सर्वसम्मति से प्रधान मा. मोहन सुरेन्द्र, मंत्री सतपाल, कोषाध्यक्ष रवि कुमार, आर्य चुने गए और महाश्य बिहारी लाल और सावित्री देवी धर्मपत्नी, स्व. मेला राम जी ने भूमि एक-एक कनाल आर्य समाज चिटियाड़ को दी थी वह एक सादे कागज़ पर गवाह सहित लिखकर भी दी गई है और दोनों का शाल और मालाओं से अभिनन्दन भी किया गया। दोनों ने कहा वेद प्रचार के लिए भूमि दान दे रहे हैं। 11-12 अप्रैल गांव दलोगढ़ा में सूबेदार श्री दलीप कुमार के घर वेद प्रचार एवं भंडारा और सर्व सम्मति से मा. चूनी लाल आर्य की अध्यक्षता में चुनाव भी सम्पन्न हुआ। प्रधान दलीप कुमार मंत्री प्रदीप कुमार और कोषाध्यक्ष राकेश कुमार चुने गए। गांव की जनता ने भाग लिया। प्रधान ने कहा जब तक भवन के लिए ज़मीन मिलती परिवारों में यज्ञ हवन एवं पर्व मनाए जाएंगे। 12-13 अप्रैल आर्य समाज राजौरी में वेद प्रचार और बलिदान भवन में 3 बजे से 5 बजे तक महिला सत्संग हुआ जो प्रतिवर्ष होता है।

14 अप्रैल प्रातः बलिदान भवन में विशेष यज्ञ-हवन का आयोजन किया गया एवं बैसाखी का पर्व भी मनाया गया और उन महान शहीदों को श्रद्धांजलि दी गई जिन्होंने 1947 को राजौरी एवं देश की आन-बान, शान को और अपनी संस्कृति की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति दी थी। उन वीर-वीरांगनाओं की याद में 2 मिनट का मौन रखा गया और आत्माओं की शान्ति के लिए प्रार्थना की गई। हर वर्ष वेद प्रचार मण्डल की ओर से बलिदान भवन में कार्यक्रम किया जाता है। 14-15 अप्रैल आर्य समाज भजन्वां में वेद प्रचार 15-16 गांव वरेरी श्री राम प्रकाश के घर वेद प्रचार और 16-17 अप्रैल (पल्लावाला) आर्य समाज पंचतुत में वेद प्रचार 16, 17, 18, 19 अप्रैल आर्य समाज अखनूर (जम्मू) में वेद प्रचार 19 अप्रैल को आर्य समाज में इस कार्यक्रम की पूर्णाहुति दी गई और बाद में श्री कुल यश राज मल्होत्रा के घर यज्ञ हवन हुआ और पारिवारिक सत्संग हुआ भारी संख्या में शहर के लोगों ने एवं परिवार के रिश्तेदारों ने भाग लिया और प्रीति भोज भी हुआ। इस प्रचार में विद्वान आचार्य विमल कुमार जी (लखनऊ) और भजनोपदेशक सुखपाल आर्य सहारनपुर से प्रत्येक स्थानों पर गांव-गांव, नगर-नगर में भारी संख्या में जनता ने भाग लिया। राजौरी एक सीमावर्ती क्षेत्र है तब भी दूर से विद्वानों को आमंत्रित करके वेद प्रचार किया जाता है। विद्वानों द्वारा नशाबन्दी, भ्रूण हत्याएं जात-पात दहेज प्रथा और सामाजिक कुरीतियों पर प्रवचन हुएं। इस सारे कार्यक्रम के सूत्राधार मास्टर चूनी लाल आर्य जी थे एवं साथ-साथ मंच संचालन करते रहें। अति सफल कार्यक्रम रहा।

-मा. रोशन शास्त्री, वेद प्रचार अधिष्ठाता

योग-ध्यान, साधना शिविर सम्पन्न

आनन्दधाम (गढ़ी आश्रम) उधमपुर, जम्मू कश्मीर में पूज्य महात्मा चैतन्यमुनि जी के सानिध्य में 12 से 19 अप्रैल तक निःशुल्क योग-ध्यान-साधना शिविर का आयोजन किया गया जिसमें हिमाचल प्रदेश, जम्मू कश्मीर, राजस्थान, दिल्ली, पानीपत, सोनीपत, उत्तराखंड तथा बिहार आदि प्रान्तों से शिविरार्थियों ने भाग लिया। प्रातःकाल डा० सुरेश जी साधकों को योगासन एवं प्राणायाम का प्रशिक्षण देते थे तथा उन्होंने योग द्वारा अनेक रोगों का निदान भी किया। क्रियात्मक योगाभ्यास पूज्य महात्मा चैतन्यमुनि जी द्वारा करवाया जाता था। इस अवसर पर पूज्य महात्मा जी के ब्रह्मत्व में सामवेद परायण-यज्ञ भी हुआ। आचार्य संदीप आर्य जी योगदर्शन का अध्ययन करवाते थे और साधकों की शंकाओं का समाधान भी करते थे। सायंकालीन सभा में पूज्य महात्मा जी वैदिक सन्ध्या करवाते थे तथा सन्ध्या पर अपने सारगर्भित प्रवचनों से भी साधकों को निहाल करते थे। मां सत्यप्रियायति, माता आनन्दायति और श्रीमती चंचल तथा अन्य शिविरार्थियों के समय-समय पर भजन होते रहें। आश्रम के प्रधान श्री भारतभूषण आनन्द, कार्यकारी प्रधान श्री विजय भगोतरा, महामन्त्री श्री यादवेन्द्र शर्मा, डा. श्रेष्ठा, श्री रमेश नैब और श्रीमती सुदेश आदि अन्य महानुभावों के सहयोग से शिविर बहुत ही सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। इस शिविर में एक विशेष उपलब्धि यह हुई कि आश्रम के समस्त ट्रस्टियों द्वारा सर्वसम्मति से आश्रम में एक आर्ष गुरुकुल चलाने का भी निर्णय लिया जिसके आचार्य पद को रोजड़, गुजरात से शिक्षा प्राप्त किए आचार्य श्री संदीप आर्य जी सुशोभित करेंगे। आगामी शिरि 27 सितम्बर से 4 अक्तूबर तक लगेगा यह भी निर्णय लिया गया।

-भारतभूषण आनन्द

आर्य पुरोहित सभा मुम्बई ने किया अग्निहोत्री परिवारों का सम्मान

आर्य पुरोहित सभा मुम्बई का 11वां वार्षिकोत्सव एवं दैनिक अग्निहोत्री (याज्ञिक) परिवार सम्मान समोरोह रविवार दिनांक 5 अप्रैल 2015 को सायं 5 से 9 बजे तक बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

इस भव्य कार्यक्रम का शुभारम्भ वृहद यज्ञ से हुआ। अनेक आर्य समाजों से प्रतिदिन यज्ञ करने वाले याज्ञिक नर-नारियों ने 22 हवन कुण्डों पर उपस्थित होकर श्रद्धापूर्वक विशेष हवन सामग्री व शुद्ध गोघृत से आहुतियां चढ़ाते हुए रोग निवारण एवं सुख शान्ति, समृद्धि एवं समुन्नति के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की।

यज्ञ ब्रह्मा आचार्या सरस्वती मातृ कन्या गुरुकुल वाराणसी थीं तथा वेद पाठी कन्याएं सुव्रती आर्य एवं वीणा चतुर्वेदी थीं।

आर्य समाज सान्ताक्रुज के विशाल सभागार में आर्य पुरोहित सभा मुम्बई के सक्रिय सदस्यों द्वारा मन्त्रोच्चारण के साथ कार्यक्रम में उपस्थित समारोह अध्यक्ष श्री मिठाई लाल सिहं, मुख्य अतिथि श्री वेद प्रकाश गर्ग सम्मानित अतिथि आर्य श्रेष्ठी श्री प्रताप सिंह शूर जी पूर्व प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, विशिष्ट अतिथि श्री हरीश आर्य, श्री अरुण अबरोल, श्री संगीत शर्मा एवं मुम्बई महानगर की महापौर श्रीमती अल्क ताई केरकर आदि का स्वागत किया गया। आचार्य विनोद कुमार शास्त्री कोषाध्यक्ष (आर्य पुरोहित सभा मुम्बई) ने अपने स्वागत भाषण में सभा के गत वर्षों के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए आज के समारोह में उपस्थित महानुभावों का सहर्ष अभिनन्दन किया। आपने समारोह की प्रशंसा करते हुए आशीर्वाद प्रदान किया। आप को सभा की ओर प्रशस्ति पत्र एवं गायत्री मन्त्रांकित उपवस्त्र प्रदान कर सभा अपने आप को गौरवन्वित अनुभव कर रही थी। आपके परिवार में पिछले 125 वर्षों से अनवरत दैनिक यज्ञ की परम्परा का निर्वहन हो रहा है जो हर व्यक्ति के लिए अनुकरणीय है।

समारोह के मुख्य अतिथि माननीय श्री वेद प्रकाश जी गर्ग प्रधान-आर्य समाज चेम्बूर ने पूरे कार्यक्रम की भूरि-भूरि प्रशंसा की। समारोह के विशेष अतिथि श्री अरूण अबरोल महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई ने कहा आर्य पुरोहित सभा मुम्बई ने अग्निहोत्र करने वाले याज्ञिक परिवारों का सम्मान करके एक सराहनीय कार्य किया है। सभी पुरोहित धन्यवाद के पात्र हैं। श्री संगीत शर्मा महामन्त्री आर्य समाज सान्ताक्रुज ने बताया कि आर्य पुरोहित ही परिवारों को संस्कारों से जोड़े रखते हैं। समारोह के अध्यक्ष श्री मिठाई लाल सिंह आर्य ने कहा इस प्रकार के यज्ञों का आयोजन तथा याज्ञिकों का सम्मान समय-समय पर होते रहना चाहिए। तत्पश्चात् लगभग 75 अग्निहोत्री (याजिक) परिवारों को प्रशस्ति पत्र एवं गायत्री मन्त्रांकित भगवा उपवस्त्र देकर सभा के अधिकारियों ने तथा सभी उपस्थित गणमान्य अतिथियों ने सम्मानित किया।

101 कुण्डीय महायज्ञ का आयोजन

आर्य कन्या विद्यालय समिति के प्रधान श्री जगदीश प्रसाद गुप्ता की अध्यक्षता में आज 10 मई 2015, रविवार को अपना घर शालीमार, अलवर में आर्य कन्या विद्यालय समिति एवं त्रेहान होम डवलपर्स के सामूहिक प्रयास से महर्षि दयानन्द सरस्वती के सिद्धान्तों, वेद प्रचार, पर्यावरण शुद्धि, विश्व शांति एवं सुख समृद्धि हेतु तथा सफाई अभियान को समर्पित 101 कुण्डीय महायज्ञ आयोजित किया गया। महायज्ञ के मुख्य अतिथि आदरणीय लोकायुक्त श्री सज्जन सिंह कोठारी तथा विशिष्ट अतिथि त्रेहान होम डवलपर्स के CMD हर्ष त्रेहान तथा सुनयन जी जयपुर रहे। यज्ञ के ब्रह्मा पंडित हरिप्रसाद व्याकरणाचार्य, नई दिल्ली, यज्ञ के अधिष्ठाता अमरमुनि जी पूर्व मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, आर्य शिरोमणि पंडित विनोदी लाल दीक्षित वैदिक विद्वान एवं समाज सेवी व पंडित शिवकुमार कौशिक रहे। श्री सज्जन सिंह कोठारी एवं श्री हर्ष त्रेहान ने प्रात: 8.15 बजे ओ३म् ध्वज फहराकर एवं दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम प्रारंभ किया। वैदिक संस्कृतिनुसार 'स्वस्ति वाचन' मंत्र के साथ तिलक लगाकर अतिथिगण का स्वागत किया गया।

प्रदीप आर्य, मंत्री आर्य कन्या विद्यालय समिति ने संबोधन कर आगन्तुक अतिथियों, यजमानों तथा उपस्थित धर्मप्रेमी बंधुओं का स्वागत किया। आर्य कन्या विद्यालय समिति द्वारा संचालित संस्थाओं का संक्षिप्त परिचय देते हुए बालिकाओं को वैदिक संस्कारों के अनुसार शिक्षित करना बताया। त्रेहान होम डवलपर्स के CMD श्री हर्ष त्रेहान ने आर्य कन्या विद्यालय समिति के इस धार्मिक कार्यक्रम में सम्मिलित होने पर भूरि-भूरि प्रशंसा की। जगदीश प्रसाद गुप्ता प्रधान, आर्य कन्या विद्यालय समिति ने संबोधित करते हुए कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रमों के आयोजन द्वारा वैदिक संस्कृति को बढ़ावा मिलता है जिससे आने वाली पीढ़ियां सुसंस्कृत होंगी।

मुख्य अतिथि जी ने अपने संबोधन में यजमय आकर्षक एवं रोचक यज्ञ प्रांगण में यज्ञ के लाभों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि औषधी युक्त यज्ञ सामग्री से यज्ञ करने पर वातावरण शुद्ध होता है। यज्ञ से सभी की धार्मिक भावनाएं जागृत होती हैं। साथ ही धर्म प्रेमी बन्धुओं को महर्षि दयानन्द सरस्वती के विचारों तथा वैदिक संस्कृति को जीवन में अपनाने के लिए प्रेरित किया। मुख्य अतिथि जी के संबोधन के पश्चात् प्रात: 8.30 बजे वेद मंत्रों का पाठ हिन्दी में करते हुए, उनके अर्थ का वाचन पंडित हरिप्रसाद व्याकरणार्चा ने मंत्र मुग्ध स्वर में करते हुए यज्ञ प्रारंभ किया।

महायज्ञ में अलवर ज़िले की जनता ही नहीं अपितु अनेक प्रांतों के लोग सम्मिलित हुए। लगभग 1000 आर्य जन ने इस महायज्ञ में सामूहिक रूप से आहुति दी। ओ३म् ध्वज से मैदान तथा पाण्डाल सुशोभित हो रहा था। पीत वस्त्रों से सुसज्जित नर नारियों से युक्त यज्ञ स्थल तपोभूमि के समान प्रतीत हो रहा था। श्रीमती कमला शर्मा ने मंच संचालन करते हुए मुख्य अतिथि जी, अतिथिगण, यजमानों, विद्यालय समिति के कर्मचारियों तथा त्रेहान होम डवलपर्स का धन्यवाद ज्ञापित किया। इस महायज्ञ में लगभग ढाई क्विंटल गाय का शुद्ध देसी घी, ढाई क्विंटल सामग्री तथा पांच क्विंटल समीधा लगी। जिसकी सुगंध से सारा वातावरण महक उठा। इसके उपरान्त ऋषि लंगर (भण्डारे) का आयोजन किया गया, जिसमें लगभग चार हजार धर्मप्रेमी आर्यजन सम्मिलित हुए। -कमला शर्मा

वेद-वेदान्त सम्मेलन

वैदिक मिशन मुम्बई द्वारा वेद-वेदान्त सम्मेलन का आयोजन आर्य समाज सान्ताक्रुज मुम्बई में २१-२२ मार्च २०१५ को किया गया। इस कार्यक्रम में भाग लेने के लिए समस्त भारत से लगभग ६० विद्वत गण पधारे थे जिनमें स्वामी प्रणवानन्द जी, स्वामी आर्य नरेश जी, स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी, डा. प्रियवंदा, डा. महावीर मीमांसक, आचार्य मोक्षराज, डा. पवित्रा आदि विद्वान प्रमुख थे।

इस सम्मेलन में अतिथि के रूप में आर्य समाज न्यूयार्क के प्रधान श्री चन्द्रभान जी, आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के पूर्व मन्त्री डा. रमेश गुप्ता, आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के प्रधान श्री मिठाई लाल जी पधारे थे। इस द्विदिवसीय कार्यक्रम में डा. कैलाश कर्मठ, श्रीमती कविता आर्या तथा श्री वीरेन्द्र मिश्रा आदि भजनोपदेशकों ने अपने मधुर गीतों से श्रोताओं को मन्त्र मुग्ध किया। इस कार्यक्रम में विद्वानों ने त्रैतवाद की सत्यता को प्रमाणित करने के अनेक प्रमाण प्रस्तुत किए। स्वामी आर्यनरेश ने बताया कि गौ-हत्या का वेदों में कहीं भी उल्लेख नहीं है। सभी विद्वान अपने अपने शोध पत्र भी लेकर आए थे। चतुर्थ सत्र में वैदिक मिशन मुम्बई के मन्त्री द्वारा वैदिक मिशन का परिचय पढ़ा गया तथा प्रणव मुखर्जी ने अंग्रेज़ी भाषा में स्वामी दयानन्द के कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा की। इसी सत्र में इस मिशन द्वारा प्रकाशित पुस्तक ''षडदर्शन परिचय'' का विमोचन किया गया तथा इस मिशन के अध्यक्ष डा. सोमदेव शास्त्री जी ने बताया ईश्वर जीव व प्रकृति तीनों तत्व अनादि हैं एवं आवश्यक भी। ईश्वर संसार को बनाने, चलाने व प्रलय करने वाला है तथा हमें कार्यों का फल देने वाला है, जीव अच्छे व बुरे कर्मों का फल भोक्ता तथा निष्काम कर्म से मोक्ष प्राप्त करने वाला है तथा प्रकृति जीव के लिए कर्म व मोक्ष का क्षेत्र है। इस प्रकार यह सम्मेलन सचमुच काफी सफल व लाभकारी सिद्ध हुआ। -संदीप आर्य मन्त्री वैदिक मिशन मुम्बई

आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया

आर्य समाज मेन बाज़ार दीनानगर में नव विक्रमी सम्वत् 2072 और आर्य समाज स्थापना दिवस 21.3.15 से 28.3.15 तक बड़े धूमधाम और उत्साह के साथ मनाया गया। प्रतिदिन प्रात: गायत्री यज्ञ होता रहा। गायत्री महायज्ञ की पूर्ण आहुति दिनांक 28.3.15 को प्रात: 10.30 बजे हुई। महायज्ञ के ब्रह्मा श्री विजय कुमार शास्त्री महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब थे। विजय कुमार कुमार शास्त्री जी का बहुत ही प्रभावशाली प्रवचन हुआ उन्होंने मर्यादा पुरुषोत्तम राम जी के चरित्र पर प्रकाश डाला और कहा राम एक आदर्श पिता, आदर्श पति, आदर्श पुत्र और आदर्श मित्र थे। उन्होंने वैदिक धर्म, वैदिक संस्कृति और आर्य समाज से जुड़ने का आग्रह किया। श्री पवन शास्त्री जी ने अपने भजनों के माध्यम से सभी को मंत्र मुग्ध किया। दिनांक 28.3.15 को प्रि. निर्मल पांधी, प्रि. उपमा महाजन, राधेश्याम महाजन जी ने ऋषि जीवन पर प्रकाश डाला और कहा ऋषि के हम पर बहुत उपकार हैं और हमें सच्चा मार्ग दिखाया। स्त्री आर्य समाज की प्रधाना सुनीता ओहरी और श्री शाम जी मधुरम प्रत्येक ने ऋषि जीवन पर बहुत ही सुन्दर एक भजन प्रस्तुत किया। श्री मनोहर सैन ओहरी आर्य समाज के वरिष्ठ सदस्य ने ध्वजारोहण किया। इन दिनों में वी.पी. ओहरी, विजय कुमार शर्मा, अरुण विज, रिंकू, कैलाश शर्मा, हीरा लाल, ईश्वर भल्ला सौरभ, रजनीश ओहरी, विनय ओहरी, योगेन्द्र पाल गुप्ता, मुनी लाल राधे श्याम, कुलदीप, रणजीत शर्मा धरेन्द्र पुष्प, प्रि. गन्धर्व राज प्रधान, धमेन्द्र गुप्ता, नवल महाजन, डा. सर्वजीत पांधी, विशाल गुप्ता अपनी धर्मपत्नियों सहित यज्ञमान बनें।

योगेन्द्र पाल गुप्ता महामंत्री ने आर्य समाज की स्थापना किसने की, कब की और उसका प्रयोजन क्या था के बारे में बताया और मंच का संचालन किया। अन्तिम दिन आर्य जिला सभा के प्रधान तिलक राज प्रि. संतोष महाजन आर्य समाज मेन बाजार पठानकोट के प्रधान, धर्मवीर जोली शाम लाल, सुरिन्द्र होंडा, रमेश महाजन गुरदासपुर वैदिक आश्रम से राम निवास गुरबचन आर्य, प्रि. बलवीर सलारिया, रछपाल सिंह, जतिन्द्र शास्त्री, बाल कृष्ण सरदार लाल, बावा लाल जी, वेद मंदिर अनोखा से प्रधान तीर्थ राम और अन्य सदस्य, बटाला आर्य समाज से इन्द्रजीत, प्रेम भारत रघुवीर सैनी और आर्य सी. सै. स्कूल, सुमित्रा देवी स्कूल और एस. एस. एम. सी. सै. स्कूल झंगी के प्रधानाचार्य और स्टाफ उपस्थित थे।

स्वामी सदानन्द जी ने कहा कि आर्य समाज स्थापना दिवस मनाना तभी सार्थक होगा यदि हम ऋषि के आदर्शों पर चलें और अपने-अपने जीवन को सार्थक बनाएं। अन्त में प्रधान धमेन्द्र गुप्ता जी ने सभी का धन्यवाद किया। समारोह के अंत में लंगर की व्यवस्था भी थी।

-योगेन्द्र पाल गुप्ता मंत्री आर्य समाज

पृष्ठ 5 का शेष- स्वर्ग के सम्बन्ध में.....

एकस्मै स्वाहा द्वाभ्यांस्वाहा शताय स्वाहैकशताय स्वाहा व्युष्टयै स्वाहा स्वर्गाय स्वाहा।। (22-34) एक परमेश्वर की प्राप्ति के लिए स्तुति, प्रार्थना, उपासना और पुरूषार्थ करो। मन और जीवात्मा दोनों की शुद्धि के लिए स्तुति, प्रार्थना, उपासना और पुरुषार्थ करो। शतवर्ष की आयु प्राप्त करने के लिए पुरुषार्थ करो। एक सौ एक प्रणव जप और गायत्री जप के लिए तत्पर हो। अन्धकार दूर करके प्रकाश की प्राप्ति के लिए प्रयास करो। स्वर्ग प्राप्ति के लिए प्रयास करो। ब्राह्मण ग्रन्थों (ता० 8-2-5) में कहा गया है-आथर्वणं लोककामाय ब्रह्मसाम कुर्यात्। (आथर्वणम्) स्थाई स्वर्ग-मोक्ष की प्राप्ति के लिए ब्रह्मसाम- अर्थात् वेदानुसार यम-नियमादि का पालन करके स्वर्ग लोक को प्राप्त करें। एतरेय ब्राह्मण (7-10) में कहा गया है कि श्रद्धा और सत्य के जोड़े से स्वर्ग-लोक को जीता जाता है। कठोपनिषद् में नचिकेता अपने दूसरे वर में स्वर्ग के सम्बन्ध में यमाचार्य से कहता है-

स्वर्ग लोके न भयं किंचनास्ति तत्र न जरया बिभेति।
उभे तीर्त्वाशनायापिपासे शोकातिगो मोदते स्वर्गलोके।।
स त्वमग्निँ स्वर्ग्यमध्येषि मृत्यो प्रब्रूहि त्वं श्रद्दधानाय मह्यम्।
स्वर्गलोका अमृतत्वं भजन्त एतद् द्वितीयेन वृणे वरेण।। (1-12,13)

स्वर्गलोक में किसी प्रकार का भय नहीं है, न वहां तू है, न जरावस्था इन दो ही से तो मनुष्य डरता है, वहां मृत्यु से भी भय नहीं, वृद्धावस्था से भी भय नहीं। स्वर्गलोक में भूख-प्यास इन दोनों प्रवाहों को तर लेते हैं। द्वन्द्वों से ऊपर उठ जाते हैं, शोक पीछे रह जाता है, आनन्द ही आनन्द रह जाता है। हे यमाचार्य! आप उस स्वर्ग प्राप्त कराने वाली 'अग्नि' को जानते हैं। हे मृत्यो! मैं श्रद्धापूर्वक पूछता हूं आप मुझे उसका उपदेश दें। जो स्वर्गलोक में जाते हैं उन्हें अमृतत्व- अमरता प्राप्त होती है इसलिए 'स्वर्ग साधक अग्नि' का आप उपदेश दीजिए। द्वितीय वर से मैं यहीं मांगता हूं।

वेदवाणी

प्रभुभक्त संसार–महासागर से तर जाते हैं

तरत् स मन्दी धावति धारा सुतस्यान्धसः।
तरत् स मन्दी धावति।।

-ऋ० ९/५८/१; साम० पू० ६/१/२/४

ऋषिः-वत्सारः।। देवता-पवमानः सोमः।। छन्दः-निचृद्गायत्री।।

विनय-हे दुःख और पाप से तरना चाहने वाला भाईयो! देखो, कोई है जो कि तर गए हैं। इस दुस्तर दिखाने वाले संसार-महासागर से तरा जा सकता है-सचमुच तरा जा सकता है, परन्तु तरता वह है जो "मन्दी" है। क्या तुम भगवान् की भक्ति-स्तुति में रमने वाले हो ? क्या इस भजनरस से तुम्हारा अन्तःकरण तृप्त हो गया है ? क्या तुम्हारा अपना आन्तर (अन्तः) आनन्द से परिपूर्ण हो गया है, अर्थात् तृप्त होकर तुम्हें अब संसार की अन्य किसी वस्तु की किसी भी वस्तु की कामना नहीं रही है ? क्या तुम ऐसे मस्त हो गए हो ? ऐसे आत्माराम हो गये हो ? "मन्दी" होने के लक्षण तो ये ही हैं। देखो, ऐसे 'मन्दी" तरते जा रहे हैं और तर गए हैं।

यह अवस्था कैसे प्राप्त होती है ? जब भजन करने से अन्तर सोई पड़ी हुई शक्ति जागती है तो वह प्राण, वाणी और मन को उज्जीवित करती हुई ऊपर की ओर चढ़ने लगती है। हठ्योगियों की परिभाषा में इसे कुण्डलिनी का जागरण और प्राणोत्थान कहते हैं। इस कुण्डलिनी का वास्तविक जागरण ही 'तरना' शुरू करना है। प्राण की धारा मूलाधार से उठकर ऊपर चढ़ने लगती है, हैमवती शक्ति नाचती-कूदती हुई, भजन-स्तुति करती हुई मार्ग में प्राण, वाणी, मन के अद्भुत चमत्कार दिखाती हुई ऊपर, अपने शिव रूप स्वामी में क्रमशः ऊपर जाती हुई अनुभूत होती है। यही उत्पन्न किए "अन्धस्" (सोम्) की धारा है जिसके साथ-साथ आत्मा ऊंचा होता जाता है। इसी धारा के साथ 'मन्दी' नामक भक्त की ऊर्ध्वगति होती है। प्रसिद्ध सात लोक अन्दर ही हैं। उन्नत होता हुआ आत्मा इन सब लोकों को पार करता हुआ सत्यलोक में पहुंचकर पूर्ण स्वतन्त्र हो जाता है-बिल्कुल पार उतर जाता है। प्राण, वाणी, मन आदि शक्तियां शिर के सत्यलोक में जाकर ठहर जाती हैं और समाधि सिद्ध हो जाती है। इस प्रकार देखो! "मन्दी" (भगवान् का भक्त) दुःख-सागर को तर जाता है-ऊपर पहुंच जाता है। अहो! इस पुण्य घटना का विचार करना-इसे कल्पना की आंखों से देखना-भी कितना ऊंचा उठने वाला है। "तरत् स मन्दी धावति", "तरत् स मन्दी धावति।"

-वैदिक विनय से साभार

माता-पिता की अपेक्षा क्यों

आर्य समाज रामनगर, गुड़गांव-हरियाणा द्वारा विशाल सप्त दिवसीय आध्यात्मिक दिव्य सत्संग यज्ञ भजन प्रवचन का कार्यक्रम विभिन्न स्थानों पर आयोजित किया गया है। दिल्ली से पधारे राष्ट्रीय कथाकार आचार्य गवेन्द्र जी यज्ञ के ब्रह्मा हैं। वेद प्रचवन किया उन्होंने कहा कि समय धीरे-धीरे बदल रहा है जो बच्चे कल तक अपने मां बाप की अंगुली पकड़ कर चलते थे उनकी मर्ज़ी के बिना कोई काम नहीं करते थे वही आज अपने बूढ़े मां-बाप को अकेला छोड़ देते हैं। क्या बच्चों के लिए उनके बूढ़े मां-बाप इतने पराये हो जाते हैं जिन से कमाई सारी जमा पूंजी खर्च कर दी। आज उन्हीं बच्चों के पास मां-बाप के लिए समय नहीं। बच्चे यदि व्यवस्थित होकर अपने में मस्त हैं तो बुजुर्गों को भी अपने में प्रफुल्लित होकर जीना सीख लेना चाहिए। जो इच्छाएं अरमान जीवन की सुबह में पूरा नहीं कर सके उन्हें जीवन की सन्धया में पूरा करें। अपने आप से प्रेम करते हुए आदर देते हुए जीवन का आनन्द लूटे। उन्होंने कहा कि आप किसी से अपेक्षा न करें उपेक्षा न करें आप किसी की प्रतीक्षा न करें। आप हर दिन समीक्षा करें। इस अवसर पर योगेश जी सतीश सत्यम् जी के भजन हुए।

-ओम प्रकाश शास्त्री प्रधान

गुरूकुल का आयुर्वेद महान घर-घर में मिले रोगों से निदान

100 गुरुकुल शताब्दी

गुरुकुल च्यवनप्राश
सभी के लिए स्वादिष्ट, रुचिकर, पौष्टिक रसायन।

गुरुकुल पायोकिल
पायोरिया की आयुर्वेदिक औषधि
दांतों में खून रोके, मुंह की दुर्गन्ध दूर करे, मसूड़ों के रोग, ढीले दांत ठीक करे।

गुरुकुल शतशिलाजीत सूर्यतापी
पुष्टीदायक, बलवर्धक
शरीर में नया खून और उत्साह का अनुभव

गुरुकुल ब्राह्मी रसायन
बुद्धिवर्धक, स्फूर्तिदायक, दिमागी कमजोरी दूर करे।

गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका
मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

गुरुकुल मधु
गुणवत्ता एवं ताज़गी के लिए

गुरुकुल चाय
खाँसी, जुकाम, इन्फ्लूएंजा व थकान में अत्यंत उपयोगी।

अन्य प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल द्राक्षारिष्ठ
गुरुकुल रक्तशोधक
गुरुकुल अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार डाकघर : गुरुकुल कांगड़ी-249404, ज़िला-हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन : 0134-416073

शाखा कार्यालय : 63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6, फोन : 23261871

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा आर. के. प्रिंटर्स प्रैस, टाण्डा फाटक जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।